अध्यक्ष हेनरी बी. आयरिंग द्वारा
प्रथम अध्यक्षता में प्रथम सलाहकार

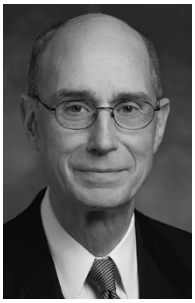

अंत तक अच्छे से रहने का इनाम

जब मैं एक युवा पुरुष था, मैं एक बुद्धिमान जिला अध्यक्ष के सलाहकार के रुप में गिरजा में सेवा कर रहा था ।

वह लगातार मुझे सीखाने की कोशिश करता रहा ।

मुझे याद है एक सलाह जो उस ने मुझे दी थीः "जब तुम किसी से मिलो, उन से ऐसे मिलो जैसे वह गम्भीर स्मस्या में हो, और आप आधे से ज्यादा समय सही होंगे ।"

फिर मैंने सोचा कि वह निराशावादी है ।

अब, 50 सालों से ज्यादा के पश्चात, मै देख सकता हूं वह कैसे संसार और जिंदगी को अच्छे से समझ सका ।

हम सभी को---कभी-कभी ,बहुत कठिन परेशानियों का समाना करना पड़ता है ।

हम जानते हैं कि प्रभु हमें परेशानियों से गुजरने के द्वारा निखरने और सम्पूर्ण होने का आदेश देता है ताकि हम सर्वदा उसके साथ रह सकें ।

प्रभु ने भविष्यवक्ता जोसफ स्मिथ को लिब्रटी जेल में शिक्षा दी थी कि परेशानियों में अन्त तक अच्छे से रहने का इनाम उन्हें अनंत जीवन के योग्य होने में सहायता देगा:

"मेरे पुत्र, तुम्हारी आत्मा को शान्ति मिले; तुम्हारी विपत्ति और तुम्हारी पीड़ाएं होंगी लेकिन थोड़े समय के लिये;

"और फिर, यदि तुम अन्त तक उसमें अच्छे से रहो, तो परमेश्वर तुम्हें पदोन्नति कर ऊंचे पर रखेगा; तुम सारे दुश्मनों पर विजय प्राप्त करोगे" (सिऔरअनु 121:7–8) ।

बहुत सी बातें हमारे जीवन में उभरकर आती हैं जिससे अन्त तक अच्छे से रहना कठिन प्रतीत होता है ।

यह इस तरह लग सकता है मानो एक परिवार फसल पर आश्रित है जबकि बारिश नहीं होगी ।

वे आश्चर्य कर सकते हैं, "कितने समय तक हम जीवित रह सकते हैं ?"

यह इस तरह लग सकता है मानो एक युवा अशीललता और प्रलोभन की बढ़ती हुई बाढ़ के विरोध का सामना कर रहा है ।

यह इस तरह लग सकता है मानो एक युवक अपनी पत्नी और परिवार का भरण-पोषण करने के लिये अवश्यक नौकरी के लिये शिक्षा या प्रशिक्षण प्राप्त करने का संघर्ष कर रहा है ।

यह ऐसा लग सकता है मानो एक व्यक्ति जो रोजगार नहीं पा सकता है या जिसने कई रोजगार खो दिए हैं क्योंकि कारोबारों ने अपने दरवाजे बंद कर दिए हैं ।

यह ऐसा लग सकता है मानो वे जो स्वास्थ्य और शारीरिक बल की कमजोरी का सामना करते हैं जो उनके या उनके किसी प्रियजन के जीवन में जल्दी या देर से आ सकती है ।

लेकिन प्रिय परमेश्वर ऐसी कोई परिक्षा हमारे सम्मुख सिर्फ यह देखने के लिये नहीं रखता कि क्या हम परेशानी में अन्त तक कायम रह सकते है परन्तु यह देखने के लिये कि क्या हम अन्त तक अच्छे से कर सकते है ताकि और निखर कर आएं ।

प्रथम अध्यक्षता ने एलडर पारले पी. प्रैट को सीखाया था (1807–57) जब वह बारह प्रेरितों के परिषद के नए सदस्य बुलाए गए थेः "आपको एक कारण से सूची में रखा है जिस मेंजस आपका सारा ध्यान लगाने की आवश्यकता है, ... एक निखरी हुई कड़ी बनेंगे । ...

आपको परिपूर्णरूप से निखरने के लिये अधिक मेहनत, अधिक परिश्रम, और कई परेशानियों को सहना चाहिए । ...

आप के स्वर्गीय पिता को उसकी जरुरत है, मैदान उसका है, कार्य उसका है, और वह ... प्रोत्साहित करेगा ... और आपको प्रोत्साहन देगा ।" [1]

"इब्रानियों की पुस्तक में, पौलुस ने अन्त तक अच्छे से रहने का फल बतायाः “और वर्तमान में हर प्रकार ताड़ना आनन्द की नहीं, पर शोक ही की बात दिखाई पड़ती है, तौभी जो उस को सहते सहते पक्के हो गए हैं, पीछे उन्हें चैन के साथ धर्म का प्रतिफल मिलता है" (इब्रानियों 12:11)।

हमारी परिक्षाएं और हमारी परेशानियां हमें सीखने और बढ़ने का अवसर देती हैं, और वे हमारी प्राकृति को भी बदल सकती हैं ।

यदि हम उद्धारकर्ता की ओर हमारे बहुतायत में मुड़ सकते हैं, तो हमारी आत्माएं निखर सकती हैं जब हम अन्त तक बने रहते हैं ।

इसलिये, पहली बात याद रखो हमेशा प्रार्थना करते रहो (देखें सिऔरअ 10:5; अलमा 34:19–29) ।

दूसरी बात आज्ञाओं का पालन करने का प्रयत्न लगातार करें—कैसा भी विरोध, प्रलोभन, या अत्याचार हमारे चारों तरफ हो रहा हो (देखें मुसायाह 4:30) ।

तीसरी महत्वपूर्ण बात है प्रभु की सेवा करना (देखें सिऔरअ 4:2; 20:31) ।

स्वामी की सेवा में, हम उसको जानते और उससे प्रेम करते है ।

हम करेंगे, यदि हम प्रार्थना में और विश्वासी सेवा में दृढ़ रहें, उद्धारकर्ता के हाथ को और हमारे जीवन में पवित्र आत्मा के प्रभाव को पहचानना शुरु करेगें।

हम में से बहुतों के पास एक अवधि दी गई है ऐसी सेवा और संगति को महसूस करने के लिये ।

यदि आप उस समय पर पीछे विचार करें, आप याद करेंगे कि आप में बदलाव हुए थे ।

बुरा करने का प्रलोभन कम लगने लगता है ।

अच्छा करने की कामना बढ़ जाती है ।

वे जो आप को अच्छी तरह जानते और आप से प्यार करते हैं कहते हैं: "आप दयालु बन जाते हैं और अधिक धैर्यवान होते हैं ।

आप वही व्यक्ति नहीं रह जाते हैं ।"

आप वही व्यक्ति नहीं थे ।

आप में बदलाव यीशु मसीह के प्रायश्चित द्वारा आता है क्योंकि आप उस पर अपनी परिक्षाओं के समय पर निर्भर रहते हैं ।

मैं आप से वादा करता हूं कि प्रभु आपकी अपनी परिक्षाओं पर सहायता के लिये आते हैं यदि आप उसे खोजते और सेवा करते हैं और आपकी आत्मा निखारने की प्रक्रिया में होंगे ।

मैं आपको चुनौती देता हूं आप अपना भरोसा अपनी सारी विपत्तियों में उसपर रखें ।

मैं जानता हूं कि परमेश्वर पिता जीवित है और कि वह हमारी हर प्रार्थना को सुनता और जवाब देता है ।

मैं जानता हूं कि उनके पुत्र, यीशु मसीह, ने हमारे सारे पापों के लिये भुगतान किया और वह चाहते है कि हम उसके पास आएं ।

मैं जानता हूं कि पिता और पुत्र हमारा ध्यान रखते और हमारा अन्त तक अच्छे से पहुंचाने का रास्ता तैयार करते हैं, दोबारा से घर आने के लिए ।

टिपण्णी

1. Autobiography of Parley P. Pratt, ed. Parley P. Pratt Jr. (1979), 120.

इस संदेश से शिक्षा

हम सब के पास चुनौतियां है जोकि हमारे विश्वास और अन्त तक योग्य रहने को जांचती हैं । उनकी जरुरतों और चुनौतियों पर विचार करें जिनको आप सीखाते हैं । भेंट करने से पूर्व, आप आभार के लिये प्रार्थना कर जानने के लिये कैसे उनका अन्त तक बेहतर से करने में मदद कर सकते हैं । आप अध्यक्ष आयरिंग के बताए नियमों और धर्मशास्त्रों दोनों पर चर्चा करने का विचार कर सकते हैं, प्रार्थना, सेवा, और आज्ञाओं का पालन करना सहित । आप व्यक्तिगत अनुभव को भी बांटें कैसे आप आशीषित हुए हैं उन तरीकों से जिसने आपकी अन्त तक अच्छे से रहने में मदद की है ।

युवा

जब मेरी प्रिय मित्र की मौत हुई

समंता लिंटन द्वारा
लेखक यूटाह, संयुक्त राष्ट्र में रहती है ।

मेरे स्कूल में जुनियर वर्ष के दौरान, मेरे मित्र को दिमागी बीमारी थी और अगले दिन चल बसी थी । यहां तक मैं गिरजे की सदस्या थी, मैं फिर भी संघर्ष करती हूं । मैंने अपने पूरे जीवनभर में सीखा था कि मैं स्वर्गीय पिता और उद्धारकर्ता की ओर किसी भी बात के लिये मुड़ सकती हूं, लेकिन इससे पहले मैं किसी ऐसी बात के लिये कभी नहीं गई थी ।

मैं घण्टों रोई, कुछ पाने की कोशिश करते हुए— कुछ भी—जो मुझे शान्ति दे । उस के जाने के बाद की रात में, मैंने स्तुतिगीत पुस्तिका ली थी । जब मैंने पन्ने पलटे, मैं "Abide with Me; 'Tis Eventide" गीत पर रूकी (स्तुतिगीत, न. 165) । तीसरी आयत पर मैं रूक गईः

मेरे साथ रहो इस शाम,
और अकेली होगी रात
अगर मै आपसे बात नही कर सका
और ना ही अपनी रोशनी आप में पा सका ।
मुझे डर है इस दुनिया का अंधकार,
मेरे घर मे रहेगा ।
हे उद्धारकर्ता ,इस रात मेरे साथ रहो;
देखो, ये शाम।

मैं इस आयत से शान्ति से भर गई थी । तब मैंने जाना कि उस रात न सिर्फ उद्धारकर्ता मेरे साथ रूके परन्तु वे ही जानते थे कि मुझे कैसा महसूस हो रहा था । मैं उस प्यार को जानती हूं जो मैंने स्तुतिगीत के द्वारा महसुस किया था जिसने सिर्फ मुझे न केवल उस रात से निकाला परन्तु मुझे अन्य परिक्षाओं से भी बाहर निकाला जिन्हें मैं अन्त तक सह रही थी ।

आप "Abide with Me; 'Tis Eventide" को डऊनलोड lds.org/go/7176 पर कर सकते है ।

© 2017 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अंग्रेजी स्वीकृति: 6/16 अनुवाद स्वीकृति: 6/16 प्रथम अध्यक्षता संदेश का अनुवाद, जुलाई 2017 । हिन्दी । 97927 294

कि वे एक बन हो सके

विश्वास परिवार सहायता

प्रार्थनापूर्वक इस सामग्री का अध्ययन करें और प्रेरणा से जानने के लिये खोजें कि क्या बांटना है । कैसे सहायता संस्था के उदेश्य को समझकर परमेश्वर की बेटियों को अनन्त जीवन की आशीषों के लिये तैयार करेंगे ?

"यीशु ने परिपूर्णता से पिता के साथ एकता द्वारा अपने आप को, शरीर और आत्मा दोनों रूप में, पिता की इच्छानुसार, सौंपकर पाया था, " एलडर डी. टॉड क्रिस्टोफरसन बारह प्रेरितों के परिषद के ने सीखाया था।

"... सच में हम परमेश्वर और मसीह के साथ एक नहीं होंगे जब तक हम उनकी इच्छा और रुचि को अपनी महान कामना नहीं बनाएंगे ।

ऐसा समर्पण एक दिन में नहीं होता है, लेकिन पवित्र आत्मा के द्वारा, प्रभु हमारे शिक्षक होंगे यदि हम इच्छा करते हों तब तक, समय की प्रतिक्रिया में, इसे सही तरीके से कहा जा सकता है कि वह हम में है जैसा पिता उस में है ।"[1]

लिंडा के. बर्टन, सहायता संस्था की जनरल अध्यक्षता, सिखाती हैं कैसे इस एकता की ओर बढ़ना हैः हमारे अनुबंधों को बनाना और रखना हमारी वचनबद्धता का एक भाव हमें उद्धारकर्ता के सामान बनाता है ।

अच्छे व्यवहार के लिये आर्दश का प्रयत्न लोकप्रिय स्तुतिगीत की कुछ पक्तिंयों में भाव दिखता हैः I'll go where you want me to go.'"
I'll say what you want me to say. …
I'll be what you want me to be.'"[2]

एल्डर क्रिस्टोफरसन ने भी हमें याद दिलाया है कि "जब हम दिन प्रतिदिन और हफ्ता दर हफ्ता मसीह के मार्ग का अनुसरण करने का प्रयास करते हैं, हमारी आत्मा का दावा उसकी उत्कर्षता है, भीतर की लड़ाई में कमी, और लालच मुसीबत खत्म करता है ।" [3]

नील एफ. मेरियट, युवतियों की महा अध्यक्षता में द्वितीय सलाहकार, ने परमेश्वर की इच्छा को अपनी इच्छा से मिलाने का प्रयास करने की आशीषों की गवाही दी थीः "मैंने नशवरता की चीजों को पाने की अभिलाषा को निकालने में संघर्ष किया था, आखिरकार जानकर कि मेरे मार्ग में बहुत कमी, सीमा, और यीशु मसीह के मार्ग का अधीन है । "[हमारे स्वर्गीय पिता] का रास्ता ही वे मार्ग है जो इस जीवन में आनंद की और आने वाले संसार में अनंत जीवन की ओर ले जाता है ।'" [4] हम विनम्रता से प्रयास करना हमारे स्वर्गीय पिता और उसके पुत्र,यीशु मसीह के साथ एक बनाना है ।

अतिरिक्त धर्मशास्त्र और जानकारी

यूहन्ना 17:20–21; इफिसियों 4:13; सिद्धान्त और अनुबंध 38:27; reliefsociety.lds.org

टिपण्णियां

1. D. Todd Christofferson, "That They May Be One in Us," Liahona, Nov. 2002, 72, 73
2. Linda K. Burton, "The Power, Joy, and Love of Covenant Keeping," Liahona, Nov. 2013, 111.
3. D. Todd Christofferson, "That They May Be One in Us," 71.
4. Neill F. Marriott, "Yielding Our Hearts to God," Liahona, Nov. 2015, 32.

इसपर विचारे

कैसे परमेश्वर की इच्छा को करने से हमें उसकी तरह बनने में सहायता मिलेंगी ?

© 2017 Intellectual Reserve, Inc. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित । भारत में छपी । अग्रेंजी स्वीकृतिः 6/16 अनुवाद स्वीकृतिः 6/16 भेंट करने वाला शिक्षा संदेश, जूलाई 2017 । हिन्दी । 97927 294